व्यवहारवाद Behaviouralism

व्यवहारवाद राजनीति के अध्ययन का एक आधुनिक उपागम है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में इस उपागम के समावेशन से एक युगांतकारी परिवर्तन आ गया इसे ही व्यवहारवादी क्रांति की संज्ञा प्रदान की गई। व्यवहारवाद स्वयं राजनीति की कोई व्याख्या प्रस्तुत नही करता है, यह केवल राजनीति के अध्ययन का एक ढांचा प्रस्तुत करता है। इस ढांचे को हम दो विशेषताओं के आधार पर पहचान सकते हैं जो निम्नलिखित है:-

(1) अध्ययन का केंद्रीय विषय
(2) अध्ययन की पद्धति

अध्ययन का केंद्रीय विषय :→ व्यवहारवाद के अन्तर्गत अध्ययन का केंद्रीय विषय जानने से पहले परंपरागत राजनीतिशास्त्र की अध्ययन पद्धति समझना आवश्यक है। परंपरागत अध्ययन पद्धति के अन्तर्गत यह देखा जाता था कि किसी देश के विधानमंडल, कार्यपालिका या न्यायपालिका जैसी संस्थाओं की रचना कैसी होती है, उनके कार्य क्या-क्या हैं, उनकी कानूनी शक्तियों का कार्य एवं सीमाक्षेत्र कहां-कहां तक है, इनके आपस में क्या संबंध है इत्यादि। संक्षेप मे कहें तो इन संस्थाओं के मानक रूप पर ध्यान दिया जाता था और इनका यथार्थ रूप अध्ययन की परिधि से बाहर ही रह जाता था।

व्यवहारवाद ने इस परंपरागत उपागम को चुनौती देते हुए यह विचार रखा कि राजनीतिक यथार्थ को समझने के लिए राजनीति विज्ञान को प्रचलित संस्थाओं के कानूनी-औपचारिक पक्षों से ध्यान हटाकर उन व्यक्तियों या क्रियाकर्ताओं के व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए जो यथार्थ राजनीति के क्षेत्र में तरह-तरह की भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, यहां राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक तत्वों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अतः व्यवहारवाद के अनुसार हमें किसी देश के विधानमंडल, कार्यपालिका और न्यायपालिका की रचना और शक्तियों के बजाय

Scanned with CamScanner

इनसे जुड़े हुए व्यक्तियों अर्थात् विधायकों, मंत्रियों, अधिकारीतंत्र और न्यायाधीशों के व्यवहार के वास्तविक प्रतिमानों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इनके अतिरिक्त, राजनीतिक क्षेत्र के अन्य पात्रों जैसे की मतदाताओं, हित समूहों, विशिष्ट वर्गों, राजनीतिक दलों, सामाजिक आंदोलनों के प्रतिभागियों और नेताओं इत्यादि के व्यवहार का भी अध्ययन करना चाहिए।

अध्ययन की पद्धति :⇒ इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से हम तीन शब्दावलियों का अध्ययन करते है –

① अंतर्विषयक उपागम (2) मूल्य-निरपेक्ष अध्ययन (3) तार्किक प्रत्यक्षवाद

व्यवहारवाद के अन्तर्गत यथार्थ राजनीति के स्वरूप तथा उसके परिवेश को समझने के लिए अन्य सामाजिक विज्ञानों से सहायता लेना आवश्यक हो जाता है इसे हम अंतर्विषयक उपागम या दृष्टिकोण कहते है। इसमे विषयिक अलगाव के बजाय विषयों की समग्रता पर बल दिया जाता है। दूसरे व्यवहारवाद वैज्ञानिक पद्धति पर अधिक बल देता है जिसके कारण वह मूल्य निरपेक्ष अध्ययन की मांग करता है। वैज्ञानिक पद्धति प्रत्यक्षवाद पर विश्वास करती है जिसके अन्तर्गत दो प्रकार के कथन को मान्यता दी जाती है:-

①- अनुभवमूलक कथन - जिसमे ज्ञान इन्द्रियों द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान को ही वास्तविक माना जाता है।

② तार्किक कथन :⇒ यह वह कथन होता है जिसको सभी मनुष्य सही समझते हैं और अपनी तर्कबुद्धि द्वारा इसकी पुष्टि भी करते हैं जैसे कि दो और दो मिलकर चार होते हैं।

व्यवहारवाद का तीसरा बिंदु है तार्किक प्रत्यक्षवाद जिसने प्रश्नों की श्रृंखला को एक नया आयाम प्रदान किया। इसने चिंतनात्मक दर्शन की बजाय अनुभवमूलक प्रश्नों की एक श्रृंखला आरंभ की इसके प्रणेता थे मोरिट्ज़ श्लिक, लुडविक विट्जेंस्टाइन और ए० जे० एयर थे जिनके नेतृत्व में व्यवहारवादी आंदोलन आगे बढ़ा।

Scanned with CamScanner